ISSN 2278-8808 IMPACT FACTOR: 1.38
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

किरातार्जुनीयम् का परवर्ती संस्कृत साहित्य पर प्रभाव

Birpal Singh, Ph. D.
Head – Department of Sanskrit
Government College Gonda Aligarh, U.P.-202123

कविवर भारवि की कविता में माधुर्य की अपेक्षा वर्णनात्मक तथा तर्कात्मक ओज की बाहुल्यता देखने को मिलती है; क्योंकि भारवि पदविन्यास के आचार्य हैं । कालिदास के समान प्रसादपूर्ण कमनीय पदावली का अस्तित्व इनके महाकाव्य में नहीं के बराबर है, तथापि अर्थ गौरवमय पदों का पूर्ण विकास प्रचुर मात्रा मे ं सन्निविष्ट है । राजनीति के सिद्धान्तों का तार्किक रीति स ् प्रतिपादन तथा प्रकृति के ृश्यों का मधुरिम वर्णन भारवि के भव्य कला के प्रौढ़ अङ्ग है, कहे ं तो अत्युक्ति नहीं होगी । संसार की विशद अनुभूति की पृष्ठभूमि पर किरातार्जुनीय में व्यावहारिक तत्त्वज्ञान का निरुपण कवि के अनुभव की विशालता, राजनीति की मार्मिकता तथा कथनोपकथन की दक्षता अभिव्यक्त करने का पर्याप्त साधन है । कवि ने अपने पाण्डित्यपूर्ण

शैली में जितना लिखा है प्रौढ़ता, अनभूति तथा भावुकता के साथ लिखा है और यह भारवि की एक अपनी विशेषता है । संस्कृत काव्य की एक नूतन शैली – विचित्र मार्ग की उद्भावना के लिए भी भारवि प्रबन्ध काव्यों के विकास में एक महिमामण्डित स्थान धारण करते हैं । इसी नूतन शैली, नवीन मार्ग का अनुसरण परवर्ती कवियों में भट्टि–काव्य के रचयिता श्री भट्टिस्वामी, "जानकीहरण" रचयिता श्री कुमारदास, प्राकृत महाकाव्य "सेतुबन्ध" रचनाकार प्रवरसेन, प्रसिद्ध "शिशुपालवध" महाकाव्य का रचनाकार महाकवि माघादि ये सभी महाकवि भारवि से पूर्ण प्रभावित हैं ।

क्रमशः उपर्युक्त सभी कवियों का वैशिष्ट्य निम्नाङ्कित हैं –

(1) महाकवि भट्टिस्वामी

यद्यनपि व्याकरण–ज्ञान को लक्ष्य मानकर इस ग्रन्थ का प्रणयन किया गया है, तथापि पाठकों को यह स्मरण करना चाहिए कि यह काव्य नहीं महाकाव्य है, व्याकरण ग्रन्थ नहीं है । अत एव महाकाव्य के अत्यावश्यक गुणों का सन्निवेश कविवर ने बड़ी निपुणता के साथ किया है ।

भट्टि–काव्य के चार सर्गों की, दशवें से तेरहवें तक की सृष्टि–कार्य की महनीय विशेषताओं को प्रदर्शित करने के लिए की गयी है । दशवां सर्ग शब्दालङ्कार की मनोहर झांकी सेअलङ्कृत है । उपमालङ्कार के जितने पृथक् –पृथक् उदाहरण है वे सभी इस सर्ग में प्राप्त होते हैं, उतने अन्य काव्यों में प्रायः

उपलब्ध नहीं होते । एकादश सर्ग की रचना माधुर्य गुण की अभिव्यक्ति के लिए प्रख्यात है । उदात्त एवम् अद्भुत भावों की उद्भावनार्थ समस्त बारहवें सर्ग की रचना की गयी है । त्रयोदश सर्ग में भाषा–निवेश अति मनोरञ्जक है । इन विशिष्ट सर्गों के अतिरिक्त भी अन्यान्य सर्गों में प्रसाद तथा माधुर्य गुणों की न्यूनता देखन में नहीं आती । भट्टि में वक्तृत्व भक्ति की उत्तमता विद्यनमान है । इसके प्रमाणभूत भट्टि–काव्य के कतिपय पात्रों के मनोरम भाषण है । विभीषण के राजनीति पूर्ण भाषण से कविवर के राजनीति विषयक अद्भुत चातुर्य का हमें परिचय प्राप्त होता है । रावण की सभा में उपस्थित होने पर शूर्पणखा का वक्तव्य भी अति महत्त्वपूर्ण हैं । कविवर ने उचित भाषणार्थ पात्रों का समुचित चयन किया है । शूर्पणखा के भाषय (पञ्चम सर्ग से) उस कुलटा के कुटिल स्वभाव का परिचय हमें पूर्णतया उपलब्ध होता है । प्राकृतिक दृश्यों का रमणीय वर्णन करने मे ं कविवर भट्टि की प्रतिभा निखर उठी है । द्वितीय सर्ग मे ं शरद् ऋतु का विशद वर्णन किया गया है । द्वादश सर्ग मे ं प्रातःकाल हृदयावर्जक वर्णन किया गया है । यह प्रातर्वर्णन समस्त संस्कृत–साहित्य में मिलना दुर्लभ है । भारवि तथा भट्टि दोनों कवियों ने शृङ्गारसाविष्ट रति में अनुरक्त कामी तथा कामिनियों के विलास वर्णन में अत्यधिक शक्ति का व्यय की है, इन्हीं सभी कारणों से किरातार्जुनीय का प्रभाव महाकाव्य पर अवश्य पड़ा है ।

(2) कुमारदास

कुमारदास भारवि और माघ के अन्तरालवर्ती युग के कवि हैं । महाकवि कालिदास के अनेक शताब्दियों के बाद संस्कृत काव्यशैली में एक विशिष्ट परिवर्तन देखने को मिलता है ।कालिदास के रससिद्ध शैली का स्थान अलंकारों से जटित तथा अर्जित वैदुष्य के प्रदर्शन की "विचित्र शैली" ने आत्मसात कर लिया । महाकवि भारवि इस विचित्र मार्ग के प्रवर्तक कवि थे जहाँ मूल वस्तु को चमत्कारी अलङ्कारों से सुसज्जित करने की कलात्मक प्रवृत्ति का प्राकट्य होता है और कथावस्तु के सूत्र की परम्परा को छिन्न–भिन्न भी चमत्कारी उपकरणों की सजावट ही कवि का प्रधान उद्देश्य जाता है । किरातार्जुनीय महाकाव्य इस शैली का प्रथम महत्त्वशाली प्रतिनिधित्व करता है । कुमारदास इसी युग के कवि थे । फलतः कालिदासीय वैदर्भी के प्रशंसक होने पर भी युग प्रकृति को शिर झुका कर उन्होंने आत्मसात किया और ऐसे काव्य की रचना की जिसमें कवि के अनुराग को दोनों प्रवृत्तियों के प्रति जागरुक होने पर भी विचित्र मार्ग को उन्हे ं अपना परमसाधक भक्त बनाया । रघुवंश को आदर्श मानकर कुमारदास ने काव्य का प्रणयन आरम्भ किया, परन्तु ज्यों–ज्यों वे आगे बढ़ते गये आदर्श से कोसों दूर हटते गऐ, दूर, एकदम दूर, इतनी दूर की वे मुड़कर भी नहीं देखते कि वे सकुमार मार्ग से कितनी दूर बहककर चले गये । कवि के कहने के प्रमाण जानकीहरण के सर्गों की तुलनात्मक आलोचना से चतुर आलोचक को पूर्णरुप से मिल सकते हैं ।

कोमल भावों के चित्रण में, मधुमय पदावली की रचना में तथा हृदय को आन्दोलित करने वाली कल्पना के सर्जन में वे आरम्भिक सर्गों में पूर्णतया संलग्न लगते हैं (रामजनम तथा रामविवाह का वर्णन

अवलोकनीय हैं), परन्तु युद्ध के चित्रण में अन्तिम सर्गों में चित्रकाव्य की निराली छठा छहरी हुई मिलती है और विदग्धों के हृदय से दूर हटकर पण्डितों के मस्तिष्क को ही आव्यायित करती है । कुमारदास ने भारवि का अनुसरण कर उद्यनानक्रीड़ा, जलक्रीड़ा, रतोत्सव, सचिवमन्त्रता, दूतसम्प्रेषण, युद्धादि का परम्परागत वर्णन किया, परन्तु इतना ध्यान अवश्य रखा कि वह वर्णन मूल कथा को विच्छिन्न न कर दे । ये सब होते हुए भी एकाक्षर, द्वयाक्षर, विलोम, सर्वतोभद्र, भुजबन्ध, निरोपथ, प्रतिलोभ तथा विविध प्रकार के यमक के प्रिति कवि की रुझान की असाधारण अभिरुचि का प्रदर्शन (18 सर्ग) उन्हे ं भारवि सम्प्रदाय का अभ्यस्त कवि घोषित करने के लिए पर्याप्त है ।

(3) प्रवरसेन

सस्ं कृत के महाकाव्यों के आधार पर प्राकृत मे ं भी महाकाव्यों की रचना समय–समय पर होती रही । इन प्राकृत महाकाव्यों में संस्कृत महाकाव्य के समस्त विशिष्ट गुण विद्यनमान है । इन प्राकृत महाकाव्यों में कथावस्तु को अलङ्कृत करने की विधा भी वही प्राचीन है । प्रकृति के मनोरम दृश्यों का, प्रभात तथा सन्ध्या का, वसन्त तथा वर्षा का, संश्लिष्ट वर्णन यहाँ प्रदर्शित किया गया है । भारवि का समकालीन "सेतुबन्ध" प्राकृत महाकाव्य का सर्वोत्तम प्रतिनिधि स्वीकृत किया गया है ।

इस महाकाव्य के रचनाकार प्रवरसेन किसी देश के राजा थे ? यह पूर्णतया ज्ञात नहीं होता । कुछ लोग इन्हें कश्मीर के राजा कहते हैं, अन्य लोग वाकाटक वंश के राजा प्रवरसेन से अभिन्नता मानते हैं । सेतुबन्ध का अपर नाम "रावणवध" या "दशमुखवध" है । ये प्रवरसेन नरेश वाकाटक वंश के ही अधीश्वर थे, जिनके साथ चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री "प्रभावती गुप्त" का विवाह हुआ था ।

"सेतुबन्ध" में कुल 15 आश्वास हैं । कथा युद्धकाण्ड की है । आरम्भ के आठ आश्वासों में शरद् रात्रिशोभा, चन्द्रोदय, प्रभात आदि के वर्णन किये गये है, जिससे इनके ऊपर संस्कृत महाकाव्य किरातार्जुनीय की शैली का सम्पूर्ण प्रभाव परिलक्षित होता है । साथ ही "कामिनीकेलि" नामक दशवें सर्ग में राक्षसियों का उद्दाम सम्भोग वर्णन किरातार्जुनीय महाकाव्य के अप्सराओं के सम्भोग वर्णन का ही पूर्णतया सूचक है ।

(4) महाकवि माघ

माघ के कहाकवि होने में किञ्चिन्मात्र भी सन्देह नहीं । पात्र के साम्प्रदायिक प्रेम से उत्तेजित होकर अपने पूर्ववर्ती "भारवि" से बढ़ जाने के लिए अथ ा प्रयास किया । भारवि शैव थे, जिनका काव्य शिव के वरदान के विषय में हैं; माघ वैष्णव थे, जिन्होंने विष्णु विषयक महाकाव्य का प्रणयन किया । वे स्वयम् अपने ग्रन्थ को "लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमाघ चारु" कहते हैं । भारवि की कीर्ति को मटियामेट करने में माघ ने अक्षुण्ण प्रयास किया । "किरातार्जुनीय" को अपना आदर्श मानकर भी माघ ने अपने काव्य में अत्यधिक अलौकिकता का आविर्भाव किया । किरात के समान ही माघ काव्य भी मंगलार्थक "श्री" शब्द से आरम्भ होता है । किरात के आरम्भ में "श्रिया करुणामधियस्य पाणिनीम्" है, उसी प्रकार माघ के

प्रारम्भ में "श्रियः पतिः श्रीमति शाषितुं जगत्" ह ै । भारवि ने किरात मे ं प्रत्येक सर्ग के अन्त मे ं "लक्ष्मी" शब्द का प्रयोग किया है । ठीक वैसे ही माघ ने अपने काव्य के सर्गान्त मे ं "श्रीः" का प्रयोग किया है । किरातार्जुनीय तथा शिशुपालवध दोनों महाकाव्यों के वर्णन क्रम मे ं पू ूतिया समानता देखने को मिलती है । दोनों महाकाव्यों के प्रथम सर्ग में सन्देश कथन है । दूसरे सर्ग में राजनीति कथन है । दोनों मे ं यात्रा का वर्णन भी है । ऋतु वर्णन भी दोनों मे ं हैं – किरात के चतुर्थ सर्ग मे ंतथा माघ के षष्ठ सर्ग में । पर्वत का वर्णन भी एक समान हैं – किरात के पांचवें सर्ग में हिमालय का तथा माघ के चाथे सर्ग में "रैवतक" पर्वत का । इसके बाद दोनों महाकाव्यों में सन्ध्याकाल, अन्धकार, चन्द्रोदय, सुन्दरियों केलि आदि विषयों का वर्णन कई सर्गों में दिये गये हैं । किरात के तेरहवे ं तथा चौदहवें सर्ग मे ं अर्जुन तथा किरात रुपधारी शिव ने बाण के लिए वाद–विवाद हुआ, माघ के सोलहवें सर्ग में ऐसा ही विवाद शिशुपाल के दूत तथा सात्यकि के बीच हुआ है । किरात के पन्द्रहवे ं तथा माघ के उन्नीसवं ें सर्ग मे ं चित्रबन्धों मे ं युद्ध वर्णन है । इन सभी उपर्युक्त साम्यों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि माघ पर किरातार्जुनीय का पूर्ण प्रभाव पड़ा है ।

यह बात दूसरी है कि माघ केवल सरस कवि ही नहीं थे, प्रत्युत एक प्रकाण्ड सर्वशास्त्र–तत्त्वज्ञ विद्वान् भी थे। भारवि में राजनीति–पटुता अवश्य दिखाई देती है, श्रीहर्ष में दार्शनिक उद्भटता अवश्य प्राप्त होती है, परन्तु माघ में समस्त शास्त्रों का जो परिनिष्ठित ज्ञान दृष्टिगोचर होता है, वह उपर्युक्त दोनों कवियों में विरान ही है । उनमें भी पाण्डित्य है, परन्तु वह केवल एकाङ्गी है, परन्तु माघ का पाण्डित्य सर्वतोमुखी है । वेद तथा दर्शनों से लेकर राजनीति तक का

विशिष्ट परिचय इनके काव्य में सर्वत्र पाया जाता है । माघ का श्रुति–विषयक ज्ञान अत्यन्त श्लाघनीय है । प्रातःकाल के समय इन्होंने अग्निहोत्र का मनोरम वर्णनकिया है । हवनकर्म में आवश्यक सामधेनी ऋचाओं का उल्लेख (11/41) । वैदिक स्वरों की विशेषता भी आपको पूर्णरुप से ज्ञात थी । स्वरभेद से अर्थभेद हो जाया करता है, इस नियम का उल्लेख मिलता है (14/24) । एक पद में होने वाला उदात्त स्वर अन्य स्वरों को अनुदात्त कर देता है – एक स्वर के उदात्त होने से अन्य स्वर "निघात" हो जाते हैं । इस स्वर–विषयक प्रसिद्ध नियम का प्रतिपादन माघ ने शिशुपाल के वर्णन में बड़ी समुचित रीति से किया है – "निहन्त्यरीनेकसदेय उदात्तः स्वरानिव" (2/95) । चौदहवें सर्ग में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का निरुपण अति विस्तृत एव ं कमनीय पद्धति से किया हुआ प्राप्त होता है । दर्शनों का भी विशिष्ट ज्ञान माघ मे ं दृष्टिगोचर होता है । सांख्य के तत्त्वों का निदर्शन अनेक स्थलों पर उपलब्ध होता है । प्रथम सर्ग में नारद ने श्रीकृष्णचन्द्र की जो स्तुति की है (1/23) वह सांख्य के अनुकूल है ।

योगशास्त्र की प्रवीणता भी देखने में आती है । "त्र्यादि चित्र परिकर्मविदो विधाय" आदि (4/45) पद्य में "चित्तपरिकर्म" सबीजयोग, सत्त्वपुरुषान्यथाख्याति योगशास्त्र के पारिभाषिक शब्द हैं । आस्तिक दर्शनों की बात ही क्या ? नास्तिक दर्शनों मे ं भी मोक्ष का ज्ञान उच्चकोटि का था । माघ बौद्धदर्शनों से भी पूर्ण परिचित थे (2/28)। वे उनके सूक्ष्मविभेदों के भी परिज्ञाता थे । वे राजनीति से भी पूर्ण परिचित थे ।

बलराम तथा उद्धव द्वारा राजनीति की विशेषताएँ व्यक्त की गयी हैं । माघ ने नाट्यशास्त्र के विभिन्न अंगों की उपमा अतिनिपुणता से दी है ।

माघ एक परिपक्व वैयाकरण थे । उन्होंने व्याकरण के सक्ष्ू म नियमों का पालन अपने काव्य मे ं भली–भाँति किया है । व्याकरण के प्रसिद्ध ग्रन्थों का भी उन्होंने उल्लेख किया है । माघ का ज्ञान ललितकलाओं में भी उच्च श्रेणी का था । वे संगीतशास्त्र के सूक्ष्म विवेचक थे (11/1) । स्थान–स्थान पर संगीतशास्त्र के मूल–तत्त्वों का निदर्शन कराया गया है । अलङ्कारशास्त्र में माघ की प्रवीणता की प्रशंसा करना व्यर्थ है, क्योंकि वह तो कवि का अपना क्षेत्र है ।

कहने का सारांश यह है कि माघ एक कवि पण्डित थे । उनका ज्ञान आस्तिक दर्शन, नाट्यशास्त्र, अलङ्कारशास्त्र, संगीत आदि शास्त्रों में उच्चकोटि का था । उन्होंने शब्द, अर्थ दोनों को काव्य माना है (2/86)।

संदर्भ

किरातार्जुनीयम् : 'घण्टापथ' संस्कृत व्याख्या 'सरला' हिन्दीव्याख्यो– पेतम्, व्याख्याकार– डॉ. सुधाकर मालवीय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।

किरातार्जुनीयम् : संस्कृत टीका आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मीकृत 'हिन्दी अनुवाद)।

किरातार्जुनीयम् : 'घण्टापथ' तथा गंगाधर मिश्र कृत 'सुधा टीका' ।

किरातार्जुनीयम् : 'घण्टापथ' टीका सहित, डॉ. बलवान सिंह यादव कृत 'रश्मि' संस्कृत हिन्दी व्याख्या प्रथम खण्ड, चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी ।

किरातार्जुनीयम् : 'सुबोध' संस्कृत–हिन्दी टीका, प्रथम सर्ग, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी ।

किरातार्जुनीयम् : 'सर्वङ्कषा' संस्कृत एवं श्रीबदरी नारायण मिश्र कृत हिन्दी व्याख्या सहित, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।

किरातार्जुनीयम् : 'विजया' संस्कृत–हिन्दी व्याख्यायुक्त, व्याख्याकार– ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, शिवबालक द्विवेदी, द्वितीय सर्ग, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी ।